दीपावली

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

दीवाली की याद इसलिए ताजा है कि जब हमारे हजूर थे, तो दीवाली के दिन वहाँ भी कुछ न कुछ लोग इकट्ठे हो जाया करते थे। शाम के वक्त आस-पास के गाँवों के लोग ढोलक छैनियाँ बजाते हुए आ जाया करते थे। वहाँ हजूर भी बैठा करते थे, सत्संग कर दिया करते थे। और उसके बाद रात को, सब मिलते थे। तो सत्संग करके आखरी जो फैसला होता था, वह यही था कि -

सन्त दीवाली नित करें सतलोक के माहिं ।

सन्त जो हैं, उनकी हमेशा ही दीवाली बनी रहती है, सतलोक में जाते हैं, वहाँ Light ही Light और प्रकाश ही प्रकाश है। असल में दीवाली का त्यौहार एक ऐसा त्यौहार है, जो हर एक समाज वाले लोग मानते हैं और इसकी जो Basic ground है न! वह हर एक समाज के इतिहास में मिलती है। सबसे बड़ा कारण हिन्दू भाइयों के लिये, श्री रामचन्द्रजी चौदह वर्ष के बनवास के बाद जब वापस आये हैं अयोध्या में, तो उन्होंने सबने खुशी के चिराग जलाये थे। पहिले आम रिवाज तो यह है, इसके साथ और रिवायतें भी हैं। विक्रमाजीत थे। जो शाक्य लोग मांसाहारी थे, उन्होंने उन सब पर कामयाबी पा कर यह दिन मनाया था। दिवाली का दिन ही था, जिस दिन कि सब शाक्यों पर उन्होंने फतेह पाई थी।

सिख भाईयों में भी गुरु हरगोविन्द साहब कई बरस ग्वालियर के किले में कैद रहे। दीवाली के दिन वह रिहा हुए। दिल्ली में एक सिख रहता था। कहते हैं कि वो कोई भी रूप धारण कर सकता था। तो वह रात के समय शेर का रूप धारण करके बादशाह हजरत मियाँ मीर के सीने पर जा बैठता था। वह रात बादशाह की बड़ी मुश्किल से गुजरती थी। रोज दिन यही हाल था। आखिर एक दिन हजरत मिया मीर साहब से पूछा कि भई यह क्या बात है ? तो कहने लगे कि भाई तूने किसी फकीर को कैद रखा हुआ है। जाओ, उससे मुआफी मांगो। कहते हैं कि बादशाह ने हुक्म दिया कि गुरु हर गोविन्द साहब को छोड़ दो। वह कहने लगे कि मैं नहीं जाना चाहता। कहने लगे कि भई किसी शर्त पर जाओ, मेरी जान छूटे। सिख लोग कमाई करने वाले होते थे, जो करना चाहते थे, कर भी सकते हैं। उन्होंने कहा कि एक शर्त पर मैं जाता हूँ कि किले में और जितने कैदी हैं यह भी आजाद हो जायें। तो बादशाह कहने लगे यह कैसे हो सकता है ? कहने लगे, देख लो, मैं नहीं जाता। उसको अपनी जान की पड़ी थी। खैर उन्होंने क्या किया, एक बड़ा चोगा सिलवा लिया, उसकी कई ताणियाँ बना दी और सबको कहा कि एक-एक ताणी पकड़ लो। चोगा बड़ा था न, सब ने पकड़ीं, सब कैदखाना ही खाली हो गया। तो आज के दिन वह अमृतसर वापस पहुंचे थे। इसलिए सिख भाईयों में इसको मनाया जाता है ।

भगवान कृष्णजी के मुतल्लिक भी जिकर आता है कि एक असुर था, उसने सोलह हजार लड़कियां अपनी कैद में रखी हुए थीं। वेह भी उनको छुड़ा कर आज के दिन वापस पहुँचे थे। यह इतिहास है दीवाली के दिन का। यह दीवाली का दिन हर कोई मनाता है। जब नजर मार के देखो तो इसकी तह में है क्या, कि बदी पर सच्चाई ने फतेह पाई थी। भगवान कृष्णजी सोलह हजार लड़कियों को छुड़ा कर वापस लाये असुर के हाथ से तो भी सच्चाई की जय हुई ना! इसी तरह विक्रमाजीत ने शकियों पर फतेह पाई, फिर भी वापस आये, तो यही बात थी। श्री रामचन्द्रजी रावण को फतेह करके वापस पहुँचे तो भई सच्चाई की फतेह थी झूठ पर। और श्री हरगोबिन्द साहब जब वापस आये हैं, वेह भी कैद से रिहा होकर आये ना, बदी पर फतेह पाई थी।

तो आज के दिन हमने क्या सबक सीखना है कि सच्चाई की हमेशा जय होती है और झूठ की हमेशा खेह होती है। चाहे चन्द रोज के लिये बेशक झूठ बोलने वाले फलते-फूलते भी नजर आयें, मगर आखिर में जय सत की है। एक और वाकिया इसी तरह श्री स्वामी राम तीर्थ का है। वेह अच्छे भक्त हुए हैं। उनका जन्म इसी दिन हुआ था, दीवाली के दिन। जब घर-बार छोड़ा तो भी दीवाली के दिन छोड़ा था। पिता को चिट्ठी लिख दी कि आज से मैं राम को हो गया। अगर तुमको किसी चीज की जरूरत हो तो मेरे राम को लिख देना, वह तुमको भेज दिया करेगा। और आज ही के दिन वह दरिया में, गंगा में, फूल बताशों की तरह चढ़ गये। तो यह दिन कई पहलुओं से खास कर मुबारिक माना जाता है।

यह तो रहा एतिहासिक लिहाज। अब आया सन्तों की नजर से। वही जो मैंने अर्ज किया कि हजूर फर्माया करते थे, ''सन्त दीवाली नित करें सतलोक के माहिं।'' दीवाली पर क्या होता है? दीवे जगाते हैं, Light करते हैं अन्धेरे मकान में। मगर कब करते हैं? आज के दिन सब कूड़ा करकट मकानों से साफ करके, सफेदी करके फिर दिये जगाते हैं। इससे दो मतलब निकलते हैं। जिस घर के अंतर दीवा नहीं जगा, उस घर की दीवाली कहाँ? वह घर कौन सा है? जिसमें आप रह रहे हैं! और सन्त भी हमेशा उस दीवाली को मनाया करते हैं। वह यह शरीर का हरि मन्दिर है जिसमें सत्य की ज्योति जगमगा रही है। कबीर साहब ने कहा है -

सुन्न महल में दियना जगा ले

अंधेरा है ना, इसमें प्रकाश कर लो। जिस मकान में ज्योति जलती हो वह खूबसूरत मालूम होता है कि नहीं। जो मकान बड़ा साफ सुथरा, चमकीला हो, सफेदी हुई हो बड़ी, ठाठ-बाठ से अन्तर, आरास्ता हो, उसमें अगर लैम्प जगा दो तो और खूबसूरती होती है। अगर बिल्कुल स्याह Dungeon (काली गुफा जैसी) मकान के अन्तर दीवा जला भी तो वह शान नहीं होती, दीवाली तभी मुबारिक है अगर आपके इस मकान में दीवा जग उठा है। वह दीवा घट-घट में है। ''दीवा बले अथक।'' चौबीस घंटे जल रहा है। मगर क्या आप उसको देखते हो? यह दीवे का प्रकाश कब होता है ?

सतगुरु मिले अंधेरा जाय । जैं देखां तैं रहया समाय ॥

तो आप दीवाली मनाना चाहते हो ! ऐतिहासिक लिहाज से भी, सत को धारण करो, झूठ कितना भी प्रफुल्लित हो, आखिर में उसकी हार है। जीत सत की है। हो सकता है लोग तुमको तंग करें, कई तरीके से। कहते हैं ना कि सच्चे आदमी का आजकल दुनिया में गुजारा नहीं है। ठीक है, लोग तंग करेंगे। मगर आखिर सत सत है, झूठ-झूठ है। पहली बात, अपना जीवन सत का बनाओ। आखिर तुम कामयाब हो जाओगे। तुम ही नहीं, और भी कई तुम्हारे साथ कामयाब हो जायेंगे, कईयों का आधार बन सकोगे। जैसे गुरु हरगोबिन्द साहिब ताणियाँ बाँध करे कैदखाने के कैदियों को छुड़ा लाये, इसलिए उनको खिताब भी दिया गया ''बन्दी छोड़ '' कि गुरु हरगोबिन्द साहब 'बन्दी छोड़', बन्धनों से छुड़ाने वाले हैं। महापुरुष सारे ही बन्धनों से छुड़ाने के लिए आते हैं। यह तन-बदन का, जिस्म का बन्धन, जिसमें हम कैद हैं। मर कर तो सारा जहान ही छोड़ता है। जो जीतेजी अगर इससे आजादी हो जाये, अन्तर दीवा जग जायें, तुम्हारी दीवाली हो जाये कि नहीं ? खैर यह इच्छा तो हुई कि दीवा जग जाना चाहिए और दीवा जल जाने ही से हमारी दीवाली हो सकती है। आप सब भाई बहनें बैठे हो, क्या तुम्हारे इस हरि मन्दिर के अन्तर, जो तुम लिये फिरते हो, वह दीवा जग चुका है ? तब तो तुम्हारी दीवाली हो गई ठीक, नहीं तो इसको जगाओ ।

तो इस दीवे के जगाने के लिए क्या करना होगा ? सवाल यह रहा। पहली बात दीवा तो जल रहा है सबके अन्तर में, मगर कई गिलाफों में ढका पड़ा है। इसमें गिलाजतें भरी पड़ी है। आँख बंद करते हो तो अंधेरा छा रहा है। वह दीवा नजर नहीं आता है। क्योंकि हमारी जो आत्मा है, इसकी वृत्तियां फैल रही हैं। फैलाव के कारण वह नजर नहीं आता। अगर वृत्तियाँ फैलाव से हटें तो वह आगे ही जल रहा है। तो जब तक यह दीवा न जगे, तब तक मनुष्य का सच्चा कल्याण नहीं है। आप देखते हो, हरिद्वार जाते हो, शाम के वक्त दरिया पर डूनों में दीवा जगाकर बहाते हैं। जो दीवा जगता रहे तो खुश, बुझ जाये तो एक और बहाते हैं। क्या मतलब कि संसार सागर से तरने के लिए ज्योति का विकास होना चाहिए। गुरु नानक साहब वहाँ गये तो वे लोग वहाँ यही रसम कर रहे थे। तो कहने लगे भाइयों, बाहर की रसम जो कर रहे हो इसमें इशारे दिये हैं, हमारे रस्मों रिवाजों में इस बात की Gleanings हैं, इशारे हैं। मगर आमिल लोगों के बगैर हमें समझ नहीं आते। लकीर की फकीरी कर रहे हैं। जब तक दीवा न जगे संसार-सागर से पार नहीं हो सकते। हर एक इन्सान के अन्तर एक दीवा अथक जल रहा है।

दीवा वले अथक । ऐसा दीवा बाले को । नानक तिस परम गत हो।

अगर इस दीवे को जगा लो तो तुम्हारी परम गति हो जाये। वह तुम्हारे अन्तर में है। सनातनी भाइयों में जब अन्त समय आता है तो कहते हैं भई जल्दी करो दीवा मन्साओ। समझे ना ! दीवा

मन्साने की रस्म है सनातनी भाइयों में, जिसका दीवा नहीं जगे, कहते हैं यह बेगता मर गया। तो यह ताकीद करते हैं कि जीते जी ही दीवा जगना चाहिए नहीं तो बेगता मर जायेगा। तो यह दीवा जगाना किसके अखत्यार रहा ? किसी सत्गुरु के हाथ में ।

सत्गुरु मिले अन्धेरा जाय । जँ देखां तां सहिया समाय ॥

आपको महापुरुष बहुत मिलेंगे। हमारे दिल में सबके लिए इज्जत है। मगर ज्यादातर महात्मा ऐसे मिलेंगे जो आपको बाहरी रौ रीति सिखलायेंगे, पूजा-पाठ कैसे करते हैं, हवन कैसे करते हैं, मत्था कैसे टेकते हैं, तिलक कैसे लगाते हैं। यह बातें सिखाने के लिये । कोई जप के लिये मंत्र वगैरह दे देंगे और बस ठीक है। मगर जब तक अन्तर दीवा जगे नहीं, काम नहीं बनता। वह परमात्मा ज्योतिस्वरूप है। जब तक उसकी ज्योति God's light तुम्हारे अन्तर जगती नहीं, प्रगट नहीं होती, तब तक कल्याण नहीं। अन्तर में दो ही मार्ग हैं भगवान कृष्णजी ने फर्माया है, कि एक पित्रियान पन्थ हैं, एक देवियान पन्थ है। पित्रियान पन्थ कर्मकाण्ड का है। नेक कर्म करो नेक फल, बद करो बद फल। जैसा बीजो वैसा काटो। ''स्वर्ग नरक फिर फिर अवतार।'' ऐसी रूह हमेशा आती जाती रहती है। जो रूह देवियान पन्थ में आती है, दिव्य के मार्ग या ज्योति के मार्ग में आती है। जो ज्योति के मार्ग में रूह आती है वह फिर वापस नहीं जाती। समझे ! तो ज्योति मार्ग में दाखिल होना कब होगा ? बाहरमुख फैलाव से नहीं होगा । Kingdom of God cannot be had by observation. प्रभु की बादशाहत में तुम बाहरमुखी फैलाव में रहकर दाखिल नहीं हो सकते ।Unless ye be born anew you cannot enter the kingdom of God. जब तक तुम दो-जन्में नहीं होते प्रभु की बादशाहत में दाखिल नहीं हो सकते और प्रभु की बादशाहत में दाखिल होने की निशानी क्या है ? ज्योति का विकास और प्रणव की ध्वनि, दो ही मार्ग हैं - एक ज्योति मार्ग एक श्रुति मार्ग । तो जो उस मार्ग में आ गया, कहां जायेगा? जहाँ से उसका Outcome है अनाम और अशब्द में। तो यह Direct route है, God into action power जो परमात्मा इजहार में आई ताकत है, उसका Contact अगर मिल जाये, यह उस पर सवार हो जाये, जैसे Electric lift पर बैठ जाओ, कहाँ पहुँचेगी ? जहाँ का बटन दबाओगे। तो जो इस पर सवार हो जायेगा कहाँ पहुँचायेगी ? जहाँ से वह आ रही है तो यह काम किसके हाथ में है ? अब है हमारे अन्तर, हम उसमें दाखिल कब हो सकते हैं ? उस पर सवार कब हो सकते हैं ? जब इन्द्रियों के घाट से ऊपर आयेंगे। Rise above the body-consciousness (पिंड के ऊपर) इसलिए कहा, Learn to die so that you may begin to live. अर्थात् (जिन्दगी चाहते हो तो मरना सीखो) अगर तुम्हारे अन्तर ज्योति का विकास नहीं हुआ,

नाम जपत काटे सूर उजेयारा । तिनसे भरम अन्धेरा ॥

तब तक मनुष्य जीवन सफल नहीं होता। जब तक यह नेहकर्म नहीं होता, जब तक नेह कर्म

न हो, आना जाना खत्म नहीं होता। बात तो यही है। तो इसके लिए क्या करना होगा ? जैसे हम दीवाली के दिन सारे मकानात को, दुकान को, दफ्तर को कूड़े करकट से खूब साफ करके सफेदी करके, फिर Lights जगाते हैं, इस मंदिर को भी कुछ ऐसा ही करना चाहिये। Blessed are the pure in heart for they shall see God. जिनके हृदय पवित्र हैं, मुबारक हैं, क्योंकि केवल ऐसे हृदय ही प्रभु को पा सकेंगे। बस ! अब मनुष्य जीवन इसी गर्ज के लिये मिला था कि हमारी आत्मा, परमात्मा से जो जन्मों-जन्मों से बिछुड़ी पड़ी है, फिर उससे मिल जाए। गर्ज तो यही थी ना ! जिसका मनुष्य जीवन पा कर यह काम हो गया, उसका जीवन सफल हो गया। उसका आना-जाना खत्म हो गया, इस दुनिया में भी शोभा पा गया और मर कर भी उसको शोभा रही ।

तो समाजों में हम दाखिल हुए थे इस खातिर। तो इस दीवाली पर जब किसी महापुरुष के पास आओ तो वह तुमको यह दीवाली जलाना सिखलाते हैं, पहले दिन थोड़ा या बहुत, फिर उसको दिनों दिन बढ़ाओ। ''कोट सूर उजेयारा।'' करोड़ों सूरजों का प्रकाश हो सकता है। उसमें प्रणव की ध्वनि है, तुमको उस जगह लय करने में कामयाब हो सकती है जहाँ से वह आ रही है ? तो यह है सन्तों का नजरिया (दृष्टिकोण) दीवाली के मुतल्लिक। और दुनिया का नजरिया मैंने ऐतिहासिक आपको बतलाया है। भई दोनों को मिला कर काम बन जायेगा। एक तो सत का जीवन धारण करो। किसी का बुरा चितवन नहीं करो मन करके भी, कर्म करके भी। अगर किसी का बुरा चितवन किया है, जबान से, मन से, वचन से, तो आज के दिन यह गिलाजत निकाल दो। उससे मुआफी माँगो और कूड़ा करकट जो है उसको बाहर निकाल दो। सत्य को धारण करो, झूठ, फरेब, दगाबाजी, रियाकारी, कपट और चोरी से बचो। किसी का हक मारा है, किसी का खून निचोड़ा है, उसको वापस कर दो। जिसका हक मारा है, झूठ फरेब करके धोखा दिया है, उससे जा कर मुआफी माँगो। किसी के मुतल्लिक अगर अपवित्र ख्याल किये हैं तो वह निकाल दो। यह गन्दगी अन्दर भरी हुई है तो दीवा नहीं जगेगा। मन करके, बचन करके और सब के अन्दर परमात्मा है। हम चाहते हैं कि उस परमात्मा की ज्योति हमारे अन्दर में प्रगट हो तो कैसे हो सकती है ? जिसका हृदय साफ हो उसी के अन्दर प्राकट होगी ना ! है, मगर दबी पड़ी है। इस अन्धेरे को दूर कैसे किया जा सकता है ? कोई हमारा दीवा जगा दे ।

तो आज के दिन मैं यह कहूँगा, दोनों पहलुओं से, पहले घर से शुरू करो। स्त्री और पुरुष। अगर पुरुष ने अपनी स्त्री को धोखा दिया है, झूठ बोला है, फरेब किया है, कोई और बुरे ख्याल किये हैं, तो उससे माफी माँगो। आप दोनों को प्रभु ने जोड़ा था। जोड़ने वाला कौन है ? प्रारब्ध कर्मों के अनुसार वह परमात्मा का Conscious hand है, जो जोड़ने वाला है। तो पहली बात, जिसने जोड़ा है वही तोड़े, कोई इन्सानी ताकत उसको न तोड़े। यह जो Divorce का कानून यहाँ बना है, यह Spiritual लिहाज से ठीक नहीं। तो आपस में गिलाजत या दुबिधा या दो-रुखी जो है, उसको दूर करो। प्रभु ने दो बुत बनाये हैं एक जान बनाई है। One soul

working in two bodies. फिर ! इसके बाद बच्चों के मुतल्लिक जो हक है, उसको अदा करो। प्रभु ने जोड़ा है, खुशी ने निभाओ। इससे स्त्री पुरुष की वफादार बने, पुरुष स्त्री का वफादार बने।

एक ज्योति दोय मूरती धन पिर कहिये सोए।
धन पिर एह न आखियन बैहन इकट्ठा होए ॥

स्त्री और पुरुष उसको नहीं कहा जाता जो दो इकट्ठे मिल बैठें, बल्कि स्त्री-पुरुष वही हैं जिनकी एक ज्योति दो बुत हैं। स्त्री घर में एक चीज माँगती है, पति बाहर गया है, उसको टेलीपैथी पहुँचे कि यह चीज चाहिए। यह एकता की निशानी है। पहले यहाँ से शुरू होगी। गिलाजत पाक करो। घर से, फिर बच्चों के मुतल्लिक। भाई-भाई आपस की गलाजत को दूर करो। अगर दिल में एक दूसरे के लिए बुरा चितवन किया है, हक मारा है, किसी दोस्त का, उससे मुआफी माँगो। Forgive and forget गिलाजत इसी से धोई जाएगी ना ! यह याद रखो कि तुम गिलाजत को गिलाजत से नहीं धो सकते। एक नाली भरी पड़ी हो, गन्दगी से, उसको फेंकने से बदबू दूर नहीं होगी, बल्कि उसको पानी के बहा देने से बदबू दूर होगी। अगर किसी के मुतल्लिक आपके दिल में बुरा चितवन है, भाई है, स्त्री है, पुरुष है, दोस्त है, मित्र है, कोई और भी है तो उसे प्यार से धो, क्योंकि आखिर आदर्श क्या है कि हम सब प्रभु के पुजारी हैं। सब महात्मा कहते हैं, प्रभु से प्रेम करो। प्रभु सब में है सब से प्रेम करो। सब का जीवन आधार है ना वह ! और आत्मा जो देह धारी है, यह भी उस प्रभु की अंश है। जब एक ही प्रभु के हम सब अंश हैं तो हम Brothers and sisters in God हैं। तो यह जो रिश्ता कुदरत ने बनाया है, इसको कायम रखोगे तो एक दूसरे का अदब रखोगे। तो किसी को धोखा नहीं दोगे। कुदरती बात है। अगर कोई एक भाई दुखी है, कोई एक उंगली दुख रही है, दूसरी उंगली को चाहिए उसकी पट्टी कर दे।

बनी नौए आदम जे आजाये यक दीगरन्द ।

इन्सान की उंगली का एक कोई हिस्सा अगर दुखता हो तो दूसरा बेकार होता है कि नहीं? तो यह हैं गिलाजतें जिनको हमने साफ करना है। पिछला कूड़ा करकट आज निकालो। भाई भाई से मुआफी माँग लो, स्त्री पुरुष से, पुरुष स्त्री से, दोस्त दोस्त और मित्र से। किसी का बुरा चितवन किया है, या हक मारा है, या बुरा चितवन करने का ख्याल हुआ है तो उसको धो डालो, फिर देखो दीवा जगता है कि नहीं ? जगा हुआ तो पहले ही है, इन्हीं गिलाजतों के सबब से वही दीवा नजर नहीं आ रहा है। जिसके अन्दर वह दीवा प्रगट नहीं हुआ, फिर दीवाली काहे की ? आप दीवाली का त्यौहार मनाने आये हैं ना ! असल दीवाली तो यही है भाई ! जिनके अन्दर रोज Light हो, मर कर भी होगी। आपने सुखमणी साहब की दूसरी अष्टपदी पढ़ी होगी, उसमें आता है-

जैं पैन्डे महा अन्ध गुबारा ।। उहां नाम संग होता उजियारा ।।

कि जब पिण्ड से रूह निकलती है, अन्धेरे में जाती है, वहाँ पर नाम प्रकाश हो कर चलता है। जिसके अन्दर ज्योति का विकास नहीं हुआ, वह रूह अन्धेरे में रह जाती है। पता नहीं कहां जा रही है। नाम ले लिया, कई-कई महीने, साल-साल निकल जाते हैं, मगर भजन का वक्त नहीं मिलता तो अगर मौत आ जाये तो! किस पर एहसान करते हो तुम ? अपने आप पर। ऐसा पुरुष अपने आपके लिए जी सकता है, बाल बच्चों के लिए, घर-बार के लिए, दोस्तों मित्रों के लिए, मुल्कों के लिए, सब भाईयों-बन्धुओं के लिए। जो दूसरों के लिए जीता है वही इन्सान है। सच्ची बात तो यही है। हमने यही देखना है, आज के दिन क्या हमारे इस घर का कूड़ा-करकट बाहर निकल गया ?

राबिन्द्रनाथ टैगोर ने कहा कि हे प्रभु, मैं जानता हूं कि तुझ में लाइन्तहा (अनन्त) दौलत है, मगर मैं इस घर के कूड़े करकट को बाहर नहीं फेंक सकता। दीवाली के दिन सफाई करनी है न पहिले! यह सफाई है, करो अगर सन्तों की दीवाली मनानी है तो। अगर बाहरी मनानी है तो भी सत का जीवन धारण करो। जहाँ सत आयेगा वहाँ सब बरकतें आ जायेंगी। झूठ बोलना छोड़ दो, मुआफ करना कोई पाप नहीं रहेगा। जो काम करके उसको बतलाने में तुमको शर्म आये, या झूठ बोलना पड़े, वह सब बुरे कर्म हैं। तो एक सत के धारण करने से सब पाप धोये जायेंगे। किसी का बुरा चितवन किया हो, गाली गलोच निकाली, पीछे कहे कि नहीं जी मैंने तो नहीं निकाली, झूठ बोला गया। और जो काम तुम छुप कर करना चाहते हो, दूसरों की नजर से, उसमें भी पाप है। यह दो कसौटियां हैं। तो सत का जीवन धारण करो। अगर तुम दुखी भी होते हो तो कोई फिक्र नहीं। आखिर सत की जय होगी। सत की जय में सब शामिल होते हैं छोटे, बड़े, बच्चे, जवान, सब। और अगर सत का जीवन होगा तो अन्दर वाली गिलाजत सब साफ हो जायेगी। गिलाजत साफ होगी तब दीवा जगेगा। दीवा है मौजूद, मगर नजर नहीं आता, सच्ची बात तो यही है। आप किस पहलू से दीवाली का त्यौहार मनाने आये हो ? अगर ऐतिहासिक पहलू है तो भी भाई सत का जीवन धारण करो। आखिर सत की जय है।

स्वामी रामतीर्थ का जीवन खास कर ऐसा बना। महापुरुषों के लिए हमारे दिल में इज्जत है, जहाँ जहाँ तक भी कोई महात्मा गये हैं, हमारे दिल में कदर है। वह इसी दिन पैदा हुए, इसी दिन घर-बार छोड़ा, पिता को चिट्ठी लिख दी, अब वह राम का हो गया, अगर तुमको कुछ चाहिये तो राम को चिट्ठी लिख देना, तुमको भेज दिया जायेगा। और इसी दिन दरिया में बह गये। एक और बात। जितने Businessman हैं ना, आज के दिन अपने नए बही खाते खोलते हैं। पिछला Account close down कर देते हैं। आप भी आज, पिछला जितना है, उसको Close down कर दो। आज से नया जीवन बना लो। पिछला Wind up करो, न Arrear रहेगा, किसी का लेना-देना, उसको Clear कर दो। बल्कि आज ही न करो, हर रोज रात को सब

Clear करके सो जाओ प्रभु की गोद में। क्या पता अन्त समय कब आ जाये ? आखिर जाना है। कौन रहा और कौन रह सकता है ? बाहर के रस्म-रिवाज, त्यौहार तो मनाते रहते हैं, जो त्यौहारों की गर्ज है उससे हम फायदा नहीं उठाते। मैं यह नहीं कहता कि तुम बाहरी मकानों को साफ न करो। भाई सब गन्दगी निकालो। Ventilated बनाओ। सजाओ। उसमें ज्योतियाँ जगाओ। बेशक कपड़े अच्छे-अच्छे पहिनो,कपड़े साफ सुथरे हों, गन्दगी को निकालो, मगर साथ जब इस मकान को नहीं साफ करोगे जो तुम लिये फिर रहे हो, जिसमें गलाजत भरी पड़ी है, तुम्हारा आना-जाना बना रहेगा। बड़ी साफ बात है।

तो इसकी सफाई क्या है ? मैंने अर्ज किया, सत को धारण करो। उसके कई पहलुओं को मैंने अर्ज किया था, जिसके लिए आपको डायरियाँ दी जाती हैं। मुझे अफसोस आता है कि बड़ी सोच समझ कर एक चीज रखी गई थी, आप लोग उसकी कद्र नहीं करते। किसी को झिड़की देने की जरूरत नहीं,किसी को गाली निकालने की जरूरत नहीं,खाली अपना किया अपने सामने हो। मैं यह भी कहा करता हूँ, चलो भाई कुछ न हो खाली Blank डायरी भर कर भेज दो। कितनी बार भेजोगे ? बड़ा Moral force बनेगा ना! और वह भी हम नहीं करते। भरते नहीं, पाप बहुत हैं। अरे पाप बहुत हैं, तो जितनी गलाजत ज्यादा हो उसको उतनी जल्दी निकालना चाहिए ना! अगर बाहरी गलाजत भरे मकानों में तुम रहोगे तो सेहत खराब हो जाती है। अरे भाई इस मकान में, जिसमें गलाजत भरी है, क्या तुम्हारी सेहत बन जायेगी ? Spiritual health ? नहीं होगी। और थोड़ा वकफा मनुष्य जीवन का जो हमको मिला है, यह बर्बाद चला जायेगा। तो मैंने आपको दो पहलुओं से दीवाली का त्यौहार पेश किया है। बाहरी लिहाज से, ऐतिहासिक से, कई Instances दिये हैं, भगवान राम का, भगवान कृष्ण चन्द्रजी का, सोलह हजार लड़कियों को छुड़ा कर लाये थे, असुर के हाथ से, गुरु गोविन्द साहब का, इसी तरह महात्मा बुद्ध से भी Connected हैं। जैनियों से भी यह Connected है। कोई न कोई इतिहास इस दिन के लिए खास मखसूस है। इसलिए ऐसा यह त्यौहार है जो हर एक समाज के लोग मनाते हैं। हिन्दुस्तान में खुशी-खुशी लोग, बिल्कुल गन्दगी निकाल के, कपड़े अच्छे-अच्छे खरीद कर, दोस्तों को भी देते हैं, गरीबों को भी देते हैं। आप भी साफ-सुथरे बनते हैं और दीवे जगाते हैं मकानों में। अरे बाहर के जगाने चाहते हो, बेशक जगा लो। मगर अगर तुम्हारे इस हरि मंदिर में वह दीवा नहीं जगा तो काम नहीं बनेगा। Body is the temple of God. यह शरीर हरि मन्दिर है जिसमें सत्य की ज्योति जग रही है। अब हमें इस जिस्म में दीया जलाना चाहिये ।

सुन्न महल में दीयना जगा ले।

कबीर साहब कहते हैं भाई जगाओ,यह दीवा जगेगा तब दीवाली बनेगी। अगर तुम दीवाली मनाना चाहते हो तो पहले जाओ सबसे फैसला करो, सब के जो वादे हैं उसको खत्म करो,

नाराजगियाँ दूर करो। आज से एक नया जीवन बना लो। किसी महापुरुष से मिलो। उसका काम यही है -

खैचें सुरत गुरु बलवान । सतगुरु मिले अन्धेरा जाय ।। जै देखां तैं सहिय समाय ।।

नजर आने लग जाता है। मगर उसके लिये Ethical life is stepping-stone to spirituality. नेक-पाक, सदाचारी जीवन प्रभु के पाने के लिये पहला कदम है। बस! जब तक यह काम नहीं बनता दीवाली नहीं बनेगी। सच की बात इसलिए पेश की जाती है कि दुनियां में यह पहलू पेश नहीं किया जाता । मनाया तो सब कुछ जाता है, मगर यह बहुत कम आप लोगों को मिलेगा। लोग इस पहलू से आपके सामने रख देते हैं कि दीवाली क्या चीज है। सत की जय हमेशा झूठ पर रहेगी। सत का जीवन धारण करो, कभी घबराओ नहीं। जिसके साथ सत है, उसके साथ परमात्मा है, उसके साथ गुरु है, उसके साथ खुदा है। और इस सुन्न महल में दीवे को जगा लो, तुम्हारे सच्ची दीवाली हो जाये। यह कैसे जग सकेगा ? जब तक यह गिलाजत से पाक नहीं होगा, यह काम नहीं हो सकता। पहले गिलाजत को पाक करो। इसलिये आप को डायरी रखने के लिये कहा गया है। दूसरे, किसी ऐसी हस्ती से मिलो जो अन्धेरे के परदे को हटा दे।

परदा दूर करे आँखन का निज दर्शन दिखलावे, साधो सो सतगुरु मोहे भावे ।।

तो दीवाली के दिन मैं तो यही समझता हूँ कि अगर यह काम आपका हो चुका है, पहले तो यह है कि अपने जीवन की सफाई करो। आजकल असल बात यह है। पहले जमानों में महापुरुष लोग पहले बर्तनों को साफ कराया करते थे। कई कई साल किसी से पानी ढुलवाना, किसी से कुछ काम कराना। कबीर साहब के पास हजरत इब्राहीम अदम गये थे तो कहते हैं वह कई साल रहे तो उनकी घरवाली ने एक दिन कबीर साहब से कहा कि यह बादशाह है। कई मुद्दतों से आया है, इसको कुछ देना चाहिए। तो कबीर साहब कहने लगे, भई अभी बर्तन तैयार नहीं हुआ। महात्मा देखता है। हमारे हजूर फर्माया करते थे कि एक शीशे की बोतल है। जब कोई आ जाये, ऐसा मालूम होता है, जैसे अचार है या मुरब्बा शीशे की बोतल में, ऐसे वह महापुरुष देख लेता है कि इसमें क्या है। मगर वह पर्दा-पोश होता है। तो उसने (कबीर साहब की घरवाली ने) कहा, भाई यह बेचारा बोलता भी नहीं, जो मिले वह खा लेता है, हर तरह का काम करता है, आप कहते हो यह तैयार नहीं है। कहने लगे, "ऐसा कर, आज यह बाहर जायेगा ना, ऊपर छुप कर बैठ रहना, एक टोकरी कूड़ा करकट भर कर इसके सिर पर फेंकना और छुप कर सुनना यह क्या कहता है ?" बादशाह बुखारे का था। जब ऐसे ही किया, बाहर से गुजरने लगा, ऊपर कूड़ा करकट की भरी टोकरी उसके सिर पर फेंक कर पीछे हो गई। तो कहने लगा, आहा, बुखारा होता तो क्या करता मैं! दिल में अभी बुखारे की बादशाही की अकड़ बाकी है। हैं ! इतनी जलील हालत ! मैं बुखारे का बादशाह ! खैर पूछा उसने क्या कहा था ? कहने लगी, "उसने यह कहा था।" कहने लगे, मैंने जो कहा बर्तन तैयार नहीं हुआ ।"

कुछ और मुद्दत गुजर गई । फिर कबीर साहब कहने लगे, अब बर्तन तैयार हो गया। कहने लगी, अब कैसे मालूम हुआ ? फर्क कोई नहीं नजर आता है। वैसे ही खाता भी है, पीता भी है, जो कहो सारे काम करता है। कहने लगे, नहीं ऐसा करो, जब यह बाहर गुजरे तो कूड़ा करकट की बजाय गन्दगी, पिशाब और पाखाना मिला कर इसके सिर पर फेंकना। कहने लगी, बहुत अच्छा। जब वह दूसरे दिन गुजरने लगा वहां से तो ऊपर से वैसे ही करके उसके सिर पर फेंका। तो सिर भर गया। कहने लगा, हे खुदा! मैं इससे भी गन्दा हूँ। पूछा क्यों, क्या हुआ ? कहने लगी, उसने यह कहा। कहने लगे, मैंने जो कहा बर्तन तैयार हो गया है। पहले जमाने में यह था कायदा ! अब जमाने बदल गये भाई ! मुआफ करना जितना घोर कलियुग है, उतनी ही ज्यादा दया है। पहले दिन ही वह क्या करते हैं ? हमको माफ कर देते हैं। पुराने जमाने में बारह-बारह वर्ष पानी ढो करके चीज जरा सी बतला देते थे। आज यह है, सन्तों ने यह देख कर कि हालात बदल गये हैं, वह दोनों काम अपने सिर से लेता है। उम्र भी उतनी नहीं रही, सेहत के लिहाज से भी हृष्ट-पुष्ट नहीं हैं, तो क्या करते हैं, स्कूल में दाखिल कर लेते हैं। कहते हैं, साफ सफाई भी करो, और भजन करो। सफाई के लिए डायरी है। मैंने बड़ी सोच-समझ कर रखी है। लोग भी झिड़के देते हैं, क्यों नहीं सबक याद किया। मैंने यही कहा डायरी रख कर भेज दो। तो अगर आप डायरी बाकायदगी से रखो, इसमें दो काम होंगे। एक तो जीवन की पड़ताल होगी। जब आपको पता होगा कि आपके अन्तर इतनी कमजोरियाँ हैं, उनको निकालने की कोशिश करोगे। जिसके नीचे बिच्छू बैठे हैं वह उन्हें निकालने की करेगा की नहीं ? पहली बात। हमारी नजर हमेशा दूसरों पर रही है, फलाना ऐसा है, फलाना ऐसा। We are unpaid apprentices of the C.I.D. of God. प्रभु के बगैर धेले पैसे के सी.आई.डी. का काम करते रहे। पहली बात अपनी तरफ देखना शुरू करो। कुछ मुद्दत अपने आपको फकीर बना लो और जो गलाजत है उसको निकालो। साथ सत्गुरु पहिले दिन वह कुछ ज्योति देता है । कितनी भारी बरकत है ? उसमें यह समर्था है ।

सत्गुरु मिले अन्धेरा जाय। परदा दूर करे आँखन का,
निज दर्शन दिखलावे । साधो सो सतगुरु मोहि भावे।
भाई रे कोई सतगुरु सन्त कहावे, नैनो अलख लखावे ।

बड़े साफ लफ्ज है। तो साथ वह दे दी, साथ ज्योति भी जगा दी है और डायरी भी दे दी कि दोनों काम साथ करो। अब तो दया में कोई कमी नहीं है, हमारे हजूर की खास Special favour समझिये जो कहोगे, सब को मिलेगा ! जाओ ऐसा ही होगा ! तो मिल रहा है, उनकी बख्शिश से फायदा उठाओ। डायरी रख लो। डायरी रखने में क्या हर्ज? कोई पैसे लगते हैं ? अपने आपको धोखा नहीं दे सकते हो, सच्ची बात तो यह है। जब अपना किया सामने होगा तो जरूर निकालोगे। तो मेरी हिदायत यही रही कि अच्छा भाई, कुछ नहीं करो, खाली दस्तखत करके भेज दो। कब तक भेजोगे ? आखिर दस्तखत तो करोगे कि नहीं ? तो दस्तखत करके भेजोगे, आखिर ख्याल आयेगा मेरा जीवन गन्दा है।

हलुवा खुर्दन रा रुये बायद ।

और फिर लुत्फ यह है कि पहले दिन आपको यह चीज मिल जाती है, थोड़ी पूंजी। फिर उसको सम्भालने का तरीका यही है। नहीं करते हो वह बन्द हो जाता है। उसमें स्याही का पर्दा फिर जाता है। परमार्थ मुश्किल नहीं है याद रखो, गिलाजत का साफ करना मुश्किल है। प्रभु का पाना मुश्किल नहीं है, इन्सान का बनना मुश्किल है। खाली जीवन को नेक-पाक, साफ-सुथरा बना लो इसमें Reflection होगी। मेरा जाती (निज का) तजुरबा है। इस मकान के पीछे क्या हो रहा है ? Clear-cut (साफ) सामने सीन आते थे। पानी साफ हो, उसमें Reflection होगा भई यह मुक्ति की निशानी नहीं है। दिल की, हृदय की सफाई का सवाल है। कबीर साहब कहते हैं -

कबीर मन निर्मल भया जियो गंगा का नीर ।

ऐ कबीर ! मेरा जो हृदय जल, पानी है, वह बिलकुल साफ हो चुका है। जिस तरह गंगा का पानी होता है, उसमें सिफत है, ऊपर से देखो नीचे कंकर भी साफ नजर आते हैं। इतना साफ होता है। ऐसी अवस्था बन जाने पर क्या हुआ ? फरमाते हैं -

पाछे पाछे हरि फिरें, कहत कबीर कबीर ॥

वह मेरे पीछे फिरता है। अरे भाई प्रभु तो ढूंढता फिरता है कि कोई हृदय साफ मिले। हमारे हृदयों में गलाजत भरी पड़ी है, वह क्या करें ! तो आप देखेंगे कितना भारी Concession है कि दो चीजें इकट्ठी साथ-साथ कराते हैं। और इसका इनाम क्या मिलता है ! अपने आराम को छोड़कर दूसरों के लिए जीवन व्यतीत करना और फिर एहसान न जताना। हमारे हजूर थे। वृद्ध अवस्था तक काम किया। क्या वे गरीब थे ? सब कुछ कर सकते थे, मगर लोगों की खातिर अन्त समय तक सेवा करते रहे ।

तो मैंने अपनी बात बड़ी साफगोई से आपके सामने रखी है कि दीवाली का मनाना दो पहलुओं से हो सकता है। एक बाहरी, सत्य का जीवन धारण करो। इतिहासों के लिहाज से, जो भी इतिहास आपके सामने रखे गये, उन सब का यही नतीजा निकलता है। दूसरे, अन्तर की दीवाली मनाओ। जब तक अन्तर की दीवाली नहीं बनेगी, जीव का सच्चा कल्याण न हुआ, न हो सकता है। यह थोड़े लफ्जों में मैंने आपके सामने चीज रखी है। आज दीवाली का त्यौहार है। जिनका दीवा जग चुका है, खुशी है। उसको और बढ़ाओ, ताकि वह सूरज की रोशनी अख्त्यार करे, बल्कि करोड़ों सूरजों की रोशनी अख्त्यार करे, अन्तर में प्रणव की ध्वनि जारी हो, वह तुम्हारी रूह को खींच कर अनाम में पहुँचाये । जितने महात्मा जो कुछ कह गये उनकी तुम खुद गवाही दो कि यह ठीक है। दादू साहब कहते हैं :—

सब कोई कहत शुनीदा, दादू कहत है दीदा।

कहते हैं, ऐसा आदमी कोई नहीं मिलता, जो गवाही दे, जो तू कहता है ठीक कहता है। तो वह, तुम सब बन सकते है जिसको गुरु मिला है। भाग्य से जिसको मिला है, अगर वह फायदा नहीं उठाते तो कितनी भारी बदकिस्मती है। मेरे पास कोई लफ्ज नहीं, जिसमें मैं तुम्हारे दिल दिमाग में यह बात बिठा दूं कि बात यही है। सुनते रोज ही हो इन बातों को, मेरे ख्याल में हजूर सारी उम्र यही गला फाड़ फाड़ कर, पुकार पुकार कर यही उपदेश करते रहे और अब भी यही कहा जा रहा है। मगर कहां तक इसका असर आप पर हुआ है, बावजूद बख्शिश मिलने के भी तो क्या कहना चाहिए? आपको मैं मुन्सिफ बनाता हूँ! ऐसा समर्थ गुरु, देखो न करने का कोई इलाज नहीं है। जिनको ऐसा समर्थ गुरु मिला है, जो तुम्हारे साथ है, अगर फिर भी तुम अभ्यास न करो तो इसका क्या इलाज हो सकता है सिवा इसके कि तुम प्रार्थना करो उस प्रभु के आगे कि वह मालिक कुछ दया करे ।

परदा दूर करे आँखन का निज दर्शन दिखलावे।

और ऐसा समय बन भी जाये, फिर इन्सान न करे तो क्या कहना चाहिए, आप बतायें ? ऐ भाईयो, कब समझोगे? क्या पता बहुत दरिया बह चुका है, कितना बाकी है ? कौन जानता है ? Time and tide wait for no man. मैं बड़े जोरदार लफ्जों से आज आप से अपील कर रहा हूँ कि यह वक्त और समा हमेशा एक सा नहीं रहता। हजूर का वक्त भी हम समझते थे हमेशा रहेगा। आखिर नहीं रहता। चलते दरिया से पानी को पी लो। फायदा उठा लो। वह बख्शिश जो हमारे हजूर की दया से बह रही है, बगैर किसी लेखे के, हिसाब के, उससे फायदा उठा लो। एक बड़ी भारी बात जो आप कर सकते हो, वह यह है कि जैसा आपको कहा जाय वैसा कहना मान लो। बाकी सब चीजें बीच में आ जायेंगी। अगर तुम लोग यह कहते हो कि हमारा प्रभु से प्यार है, प्रभु जिनके अन्तर प्रगट है उनसे प्यार है, जिससे प्यार होता है, उसका कहना मानते हैं कि नहीं? उसके इशारे पर भी चलते हैं। वह मुँह से न भी कहे तो भी वह काम करते हैं जो उसको भाता है। If you love me keep my commandments कि अगर तुम मुझसे प्यार करते हो तो मेरा कहना मानो। कहना क्या है यही कुछ कहना है जो आपके सामने कई बार कहा, अब भी कहा जा रहा है। जब तक तुम कहना नहीं मानते, काम नहीं बनता। तो आज से कहना मान लो। मैंने कई बार यह कहा है कि यह सत्संग सत्संग रहे। यहां दाखिल हो तो सब दुनिया को बाहर छोड़ कर आओ। जितनी देर इस जगह रहो, सिवाय प्रभु की याद और गुरु की याद के और कुछ चीज नहीं हो। यहां न रंग हो न तमाशा हो, न दौड़ हो, न भाग हो, दुनिया के खयालात मण्डल को खराब करें। जो इन्सान आयेगा उसका खयाल टिक जायेगा। आप भाईयों ने इस बात को माना नहीं। अब कुछ थोड़ा सा संयम में आने का ख्याल हुआ है। कुछ बेहतर है, मगर अब भी सारा बेहतर नहीं। तो जो कहा जाये उसको मानो। इसमें तुम्हारा फायदा है और सिरदर्दी भी कम है। सबक दिया है, सुनो, और ले जाओ। तो भाव और प्रेम से, प्रेम इसी में है, जो कहना माने ।

सत्गुरु बचन, बचन है सत्गुरु ।

सत्गुरु जो है न, जो वचन कहता है, वही वचन सत्गुरु है। जो सत्गुरु को मत्था टेकता है, वचनों को मत्था नहीं टेकता उसका कल्याण अभी दूर है। क्या कहा जाता है ? कि भई जीवन साफ सुथरा बनाओ। डायरी रख लो। बस। Complete diary रख लो, देखो काम बनता है कि नहीं ? घरो में जैसे मैंने अभी अर्ज की है, एक दूसरे से झगड़े, एक दूसरे से दुश्मनी, एक दूसरे का बुरा चितवन, यह गलाजत आज साफ कर दो। पिछला Account clear करो, आज से नया बना लो। और रोज रात को सोते हुए, सब गलाजत साफ करो और प्रभु की गोद में चले जाओ या गुरु की गोद में चले जाओ। देखो पलटा खाता है जीवन कि नहीं। जरूर खायेगा। मैंने तो मौजूदा Taste के मुताबिक परमार्थ को As a science रखा है। किसी समाज में हो, यहां समाजों का कोई झगड़ा नहीं। जिस समाज में रहो वही समाज मुबारिक है। क्योंकि समाजों का ताल्लुक आपके जिस्म से है, इसका ताल्लुक है तुम्हारे हृदय से। बात तो यही है। जब आपकी आत्मा मन इन्द्रियों से ऊपर आयेगी तो आप कौन से समाज के रह जायेंगे ? न कोई हिन्दू रहेगा न मुसलमान रहेगा, न सिख, न ईसाई। तुम आत्मा हो। जितना फैलाव में जाओगे, उतनी दूरी, उतनी स्याही का पर्दा, चाहे काम के वेग हों, क्रोध के, ईर्ष्या के द्वेष के, लोभ के या मोह के या अहंकार के, सब स्याही का पर्दा का फेर देता है।

हम खुदा खही ओ हम दुनिया दूँ। ईं ख्याल अस्तो मुहाल अस्तो जुनूं ॥

अगर तुम प्रभु को पाना चाहते हो, साथ ही दुनिया की गलाजत दिनों दिन अपने साथ लबेड़ रहे हो, इस वहम और गुमान में न बैठो, हां इसका यह मतलब नहीं कि आप दुनिया को छोड़ छाड़ कर जंगलों की राह लो। इसका मतलब सही नजरी पैदा करता है। जैसे मैंने पहले अर्ज किया है, कि सबके मिलाने वाले प्रारब्ध कर्म हैं जिसकी कलम प्रभु के हुक्म से चलती है।

कर्मी वहे कलम ।

उसको निभाओ। सबके अन्तर परमात्मा है। उसी के सब अंश हो, सबसे प्यार रखो। और सब का जीवन आधार वही है। अगर मेरा आपसे प्यार है, आपके बच्चों से प्यार होगा, सबका पिता एक है, परमात्मा, हम सब उसके बच्चे हैं, तो हमारा आपस में प्यार क्यों नहीं होगा ? क्यों दुविधा में हो ? पहले घरों की गलाजत अपने से साफ करो, बच्चों से, घर को स्वर्ग बनाओ। हम लोगों के घर नरक बने हुए है मुआफ करना। स्त्री की पति से नहीं बनती, बच्चे-बच्चे लड़ रहे हैं, हला-हल मच रही है। दोस्त, मित्र, किसी का कोई इतबारी नहीं। किस पर एतबार करें ? इन चीजों को पहले साफ करो। आज दीवाली का दिन है, आप सब एक दूसरे के गले लग कर बैठना सीखो। फिर आ कर आगे की बात करो। फिर क्या होगा जब तात पराई नहीं रहेगी, मन चैन में होगा कि नहीं ? हम जब भी बैठते हैं, तो सोचते हैं, कि फलाने ने मुझसे यह कह दिया था, फलाने ने यह कर दिया, फलाना मेरा हक मार गया, फलाना यह कर गया। यही करते रहते हैं

ना ! माफ कर दो, माफ करना बड़े बहादुर आदमी का काम है यह याद रखो, समझे ! माफ करके भूल जाओ, माफ करके भी याद रहे कि मैंने एहसान किया इस पर यह भी न कहो। फिर देखो शान्ति होती है कि नहीं ? सारी बैचेनी जाती रहेगी। और साथ अन्तर नाम का, अन्तर ज्योति का विकास हो, प्रणव की ध्वनि जारी हो गई फिर तो क्या कहना ! तुम्हारे अन्तर प्रभु का प्यार बनेगा। साधु और एक आम इन्सान में क्या फर्क है ? वह इन्सानी शकल रखता है।

उसमें सुभर भरे प्रेम रस रंग । उपजे चाव साध के संग ।

वह प्रभु के प्रेम और विश्व के प्रेम के Over flowing प्याले होते हैं । उभर-उभर कर डुलने वाले Radiation होकर वैसे ही असरात बनते हैं। जैसे बरफ से लग कर जो हवा आये वह ठंडी होती है ऐसे ही जिस जगह वह बैठे उसके इर्द-गिर्द उसकी Radiation मिलती है। लोगों को ठंडक और राहत मिलती है, टिकाव मिलता है, समझे ?

जिस डिठियां मन रहसिये, सत्गुर तिसका नाँव ।

जिसको देखने से दिल को थोड़ा सा टिकाव मिले, वह सरुर, उसमें सत की धारा चल रही है। ऐसे पुरुषों को देखकर तुम्हारा भी जी करेगा कि हम भी ऐसे बन जाये। पहलवानों को देखकर पहलवानी का शौक बनता है कि नहीं ?

प्रचारों से नहीं बनेगा याद रखो। प्रचारकों का अपना ही जीवन नहीं तो दूसरों पर क्या असर होगा ?

पहले मन परबोधो अपना, पाछे अवर रिझाओ ।

Wanted reformers. हमें सुधारकों की जरूरत है। Not of others but of themselves. कहते हैं दूसरों को प्रचार करने वाले नहीं, अपने को सुधारने वाले। तुम अच्छे बनो, तुम ऐसा करो, तुम वैसा करो। अपने को प्रचार करो, दूसरों को छोड़ो। अगर तुम्हारा जीवन बन जाये, हजारों पर असर पड़ेगा। तो आज दीवाली के दिन जो मुझे थोड़े से लफ्ज इस वक्त याद आये वह पेश किये हैं। इसको आप अपने पल्ले बांधो और आज ही से पिछला Account close down करो। नया जीवन अख्त्यार करो। जिससे दिल में रंजिश है, उसको माफ कर दो। किसी ने बुरा तुम्हारे साथ किया है, उसको माफ कर दो। किसी के लिये तुम्हारे दिल में बुराई है तो उसको छोड़ दो। और फिर साथ ही साथ अन्तर के दीवे को जलाओ, तुम्हारे जीवन का कल्याण हो जाये। बात तो यही है, मैं सबको अर्ज कर रहा हूँ और अपने आपको भी कह रहा हूँ। यह नहीं कि दूसरों को कहता हूँ आप नहीं करता। मेरे दिल में यही है। भई असल परशाद जो था, वह तो गया बंट। जितना खाओगे दिनों दिन बढ़ेगा। क्योंकि हजूर की याद में बैठे हैं ! वह दीवाली के दिन कुछ न कुछ बांटा करते थे। इसलिए यह जो वह बांटा करते थे वही उन्हीं का नाम लेकर आपको दिया जाता है। प्रेम प्यार से खाओ। मगर यह सबक न भूलो जिसको आपको आज याद दिलाया गया है ।